

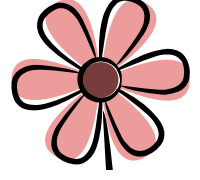


विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध



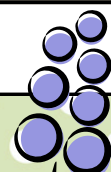
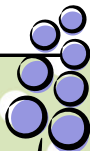
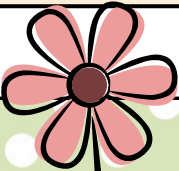
सरस्वती शिशु मन्दिर

सी-41, सेक्टर-12, नोएडा



Contact Info

Phone: 0120-4545608 | Email: ssmnoida.in | Website: ssm.noida@gmail.com



ज्ञानोदय

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

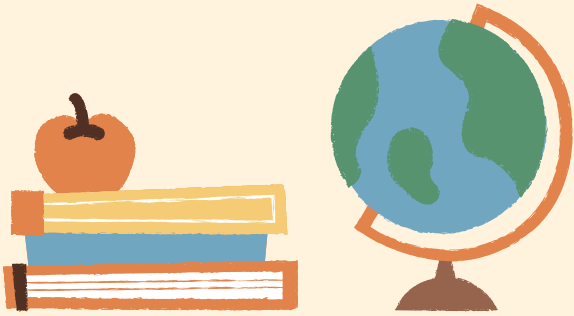
सरस्वती शिशु मन्दिर, सी - 41, सेक्टर - 12, नोएडा

मासिक ई-पत्रिका, नवंबर - 2025

ज्ञानोदय (अंक-61)

संरक्षक मंडल

श्री प्रताप मेहता
श्री प्रदीप भारद्वाज
श्री कृष्ण कुमार बंसल
श्री राजीव नाईक
श्री नितीश आर्य
श्री जितेन्द्र कुमार गौतम
श्री सुशील कुमार



मार्गदर्शक

श्री देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

संपादक

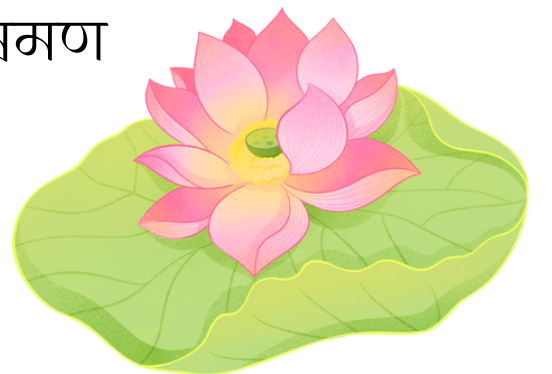
श्री लेखराज सिंह (आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

संपादक मंडल

श्री दीपक कुमार
श्रीमती तरुणा सक्सेना
ब०अनु सिंह



- ◆ संपादकीय
- ◆ प्रधानाचार्य जी की कलम से
- ◆ भारतीय नौसेना दिवस
- ◆ भारतीय भाषा दिवस
- ◆ सुब्रमण्यम भारती जयंती
- ◆ विजय दिवस
- ◆ गणितज्ञ रामानुज जयंती^{us}
- ◆ मालवीय जयंती
- ◆ वीर बाल दिवस
- ◆ गुरु गोविन्द सिंह जयंती
- ◆ अतिथियों का विद्यालय भ्रमण
- ◆ सप्तशक्ति संगम
- ◆ संभाग निरीक्षक
- ◆ स्वर्ण प्राशन
- ◆ क्षेत्रीय शिशु वर्ग खेलकूद समारोह
- ◆ वंदे मातरम्
- ◆ रानी लक्ष्मीबाई जयंती
- ◆ नगर भ्रमण (पिकनिक)
- ◆ विद्यालय निरीक्षण
- ◆ सप्तशक्ति संगम
- ◆ जन्मोत्सव हवन कार्यक्रम
- ◆ सह संगठन मंत्री का विद्यालय भ्रमण
- ◆ बताओ तो जानें
- ◆ पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी



रागों में बसी भारतीय संस्कृति



भारतीय संस्कृति की आत्मा उसके संगीत में समाहित है, और इस संगीत की आत्मा रागों में बसती है। राग केवल सुरों का संयोजन नहीं हैं, बल्कि वे भावनाओं, प्रकृति और जीवन के विभिन्न रंगों की सजीव अभिव्यक्ति हैं। भारतीय शास्त्रीय संगीत में प्रत्येक राग का एक विशेष समय, भाव और वातावरण निर्धारित होता है, जो उसे अन्य संगीत परंपराओं से अलग और विशिष्ट बनाता है। भारतीय रागों की उत्पत्ति **वैदिक काल** से मानी जाती है। सामवेद को संगीत का मूल स्रोत कहा गया है, जहाँ मंत्रों का गायन विशेष सुरों और लयों में किया जाता था। समय के साथ यह परंपरा विकसित होती गई और रागदारी संगीत के रूप में एक सुव्यवस्थित स्वरूप में सामने आई। हर राग अपने भीतर भक्ति, श्रृंगार, करुणा, वीरता या शांति जैसे रसों को समेटे हुए होता है।

रागों का संबंध भारतीय जीवनशैली से भी गहराई से जुड़ा है। जैसे प्रातःकालीन राग—भैरव और तोड़ी—दिन की शुरुआत में शांति और साधना का भाव उत्पन्न करते हैं, वहीं संध्या और रात्रि के राग—यमन, दरबारी और मल्हार—मन को विश्रान्ति और आत्मचिंतन की ओर ले जाते हैं। इसी प्रकार ऋतु आधारित राग भारतीय प्रकृति और मौसम से हमारे सांस्कृतिक संबंध को दर्शाते हैं।

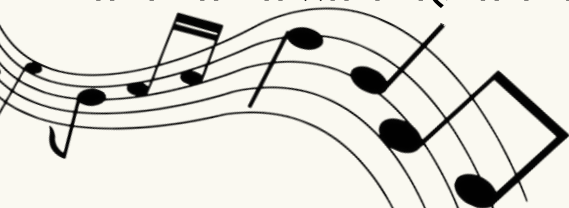
भारतीय संस्कृति में संगीत केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि साधना और आत्मिक उन्नति का मार्ग रहा है। संतों और भक्त कवियों ने रागों के माध्यम से ईश्वर भक्ति को जन-जन तक पहुँचाया। मंदिरों, दरबारों और लोकजीवन में रागों की उपस्थिति भारतीय समाज की सांस्कृतिक एकता को दर्शाती है।

इस प्रकार राग भारतीय संस्कृति की धरोहर हैं, जो पीढ़ी दर पीढ़ी हमारे मूल्यों, परंपराओं और संवेदनाओं को संजोए हुए हैं। रागों में बसी यह संस्कृति आज भी भारतीय पहचान को जीवंत बनाए हुए है। 🎵



दीपक कुमार

अंक सम्पादक (ज्ञानोदय)





प्रधानाचार्य जी की कलम से



भारतीय शिक्षा दर्शन

"दृश्यते यथार्थतत्त्वमनेन" अर्थात् जिसके द्वारा यथार्थ तत्त्व के स्वरूप का ज्ञान होता है, उसे दर्शन कहते हैं। विश्व में जितनी भी मानव प्रवृत्तियाँ हैं उनका आधार कोई-न-कोई दार्शनिक सिद्धांत है। जिस सार्वभौमिक सैद्धांतिक आधार पर किसी कार्य के उद्देश्य, पद्धति, प्रणाली, कार्यक्रम आदि का संयोजन होता है उस आधार को ही दर्शन कहा जाता है। जीवन का चिंतन-पक्ष दर्शन है। राष्ट्र के जीवन दर्शन पर आधारित प्रत्येक देश का अपना शिक्षा दर्शन होता है। आचार्य विनोबा भावे के अनुसार, "जीव, जगत और जगदीश्वर के प्रति हमारी दृष्टि दर्शन कहलाती है।"

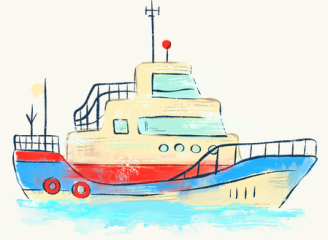
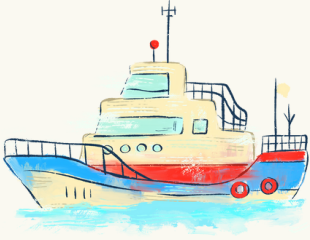
भारतीय दर्शन में शिक्षा का स्वरूप

शिक्षा मनुष्य जीवन के परिष्कार एवं विकास की प्रणाली है। समस्त मानव जीवन ही शिक्षा है और शिक्षा ही जीवन है। शिक्षाशास्त्र में व्यक्तित्व के संतुलित एवं सम्पूर्ण विकास को शिक्षा का लक्ष्य माना जाता है। शिक्षा द्वारा मनुष्य की बाह्य एवं आन्तरिक शक्तियों का सर्वांगीण विकास होता है। सर्वांगीण विकास से तात्पर्य **शरीर, मन, बुद्धि तथा चित्त का विकास** है।

मनुष्य एवं समाज जीवन की संकल्पनाएं प्रत्येक देश की संस्कृति एवं जीवन दर्शन के अनुसार अलग-अलग होती हैं। जीवन दर्शन ही उस राष्ट्र के व्यक्तियों में समान जीवन लक्ष्य एवं आदर्शों का निर्माण करता है तथा उन जीवनादर्शों को प्राप्त करने की प्रेरणा देता है। यही कारण है कि दार्शनिक सिद्धांतों की विभिन्नताओं के कारण शिक्षा की समस्याओं के प्रति दृष्टिकोणों में भी भिन्नता पायी जाती है। अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा आयोग के प्रतिवेदन में कहा गया है, "प्रत्येक देश में शिक्षा व्यवस्था वहाँ की राष्ट्रीय चेतना, संस्कृति एवं परम्पराओं की सर्वोच्च अभिव्यक्ति होती है। क्योंकि कोई एक राष्ट्र दूसरे के समान नहीं होता अतः शिक्षा की समस्याओं की व्याख्याएँ भी उतनी ही मिलती हैं जितने विश्व में देश हैं।"

देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा



भूमिका: भारतीय नौसेना दिवस हर वर्ष 4 दिसंबर को मनाया जाता है। यह दिन हमारे देश की समुद्री सीमाओं की रक्षा करने वाले बहादुर नौसैनिकों को समर्पित है। इस दिवस को मनाने का उद्देश्य भारतीय नौसेना की शक्ति, अनुशासन, त्याग और गौरवशाली इतिहास को याद करना है।

इतिहास और महत्व: 4 दिसंबर 1971 को भारत और पाकिस्तान के बीच हुए युद्ध के दौरान भारतीय नौसेना ने ऑपरेशन ट्राइडेंट नामक अभियान चलाया था। इस अभियान में भारतीय नौसेना ने पाकिस्तान के कराची बंदरगाह पर हमला कर उसकी नौसैनिक शक्ति को नष्ट कर दिया था। यह अभियान भारत की एक ऐतिहासिक जीत साबित हुआ और इसी विजय की याद में हर वर्ष यह दिन “भारतीय नौसेना दिवस” के रूप में मनाया जाता है।

भारतीय नौसेना की भूमिका: भारतीय नौसेना देश की समुद्री सीमाओं की सुरक्षा के साथ-साथ आपदा प्रबंधन, राहत कार्य, अंतरराष्ट्रीय समुद्री सहयोग और शांति मिशनों में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह केवल युद्ध के समय ही नहीं, बल्कि शांति के समय भी देश की सुरक्षा और सेवा में तत्पर रहती है।

नौसेना का आदर्श वाक्य:

भारतीय नौसेना का आदर्श वाक्य है — “शं नो वरुणः”

जिसका अर्थ है — “जल के देवता वरुण हमारे लिए शुभ हों।”

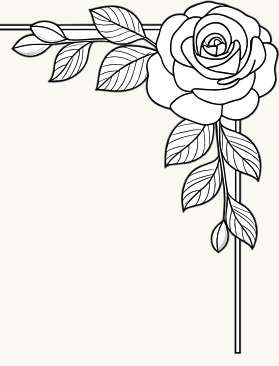
यह वाक्य वेदों से लिया गया है और यह नौसेना के साहस, निष्ठा और समर्पण की भावना को दर्शाता है।

निष्कर्ष: भारतीय नौसेना दिवस हमें यह याद दिलाता है कि हमारे देश की सीमाएँ केवल धरती पर ही नहीं, बल्कि समुद्र में भी सुरक्षित हैं। हमें अपने नौसैनिकों के त्याग, पराक्रम और समर्पण पर गर्व है। इस दिन हम सभी को अपने सैनिकों के प्रति सम्मान और कृतज्ञता व्यक्त करनी चाहिए।



अंजलि शर्मा (आचार्या)

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा



भारतीय भाषा दिवस 11 दिसंबर को मनाया जाता है, जिसका उद्देश्य देश की भाषाओं की विविधता और महत्व को प्रदर्शित करना है। यह दिन आधुनिक तमिल कविताओं के प्रमुख कवि सुब्रमण्य भारती की याद में मनाया जाता है।

भारतीय भाषा दिवस का महत्व

भारतीय भाषा दिवस हमें अपनी मातृभाषा के प्रति गर्व महसूस करने का अवसर प्रदान करता है। यह दिन हमें हमारी भाषाओं की विविधता और संस्कृति के महत्व को समझने के लिए प्रेरित करता है।

भारतीय भाषा दिवस कैसे मनाया जाता है?

भारतीय भाषा दिवस के अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जिनमें शामिल हैं:

- भाषा प्रतियोगिताएं: छात्रों के लिए भाषा प्रतियोगिताएं आयोजित की जाती हैं, जिनमें वे अपनी भाषा कौशल का प्रदर्शन कर सकते हैं।
- सांस्कृतिक कार्यक्रम: विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है, जिनमें भाषाओं की विविधता और संस्कृति का प्रदर्शन किया जाता है।
- भाषा कार्यशालाएं: भाषा कार्यशालाएं आयोजित की जाती हैं, जिनमें लोगों को अपनी मातृभाषा के महत्व और उपयोग के बारे में जानकारी दी जाती है।

निष्कर्ष

भारतीय भाषा दिवस हमें अपनी मातृभाषा के प्रति गर्व महसूस करने और भाषाओं की विविधता को समझने का अवसर प्रदान करता है। हम अपनी मातृभाषा के महत्व को समझें और इसे बढ़ावा देने के लिए काम करें।



आराधना सिंह (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा



सुब्रमण्यम भारती जयंती



सुब्रमण्यम भारती (1882-1921) एक महान तमिल कवि, लेखक, पत्रकार और स्वतंत्रता सेनानी थे, जिन्हें 'महाकवि भारथियार' के नाम से भी जाना जाता है, उन्होंने अपनी कविताओं से देशप्रेम और समाज सुधार का संदेश दिया, वंदे मातरम का तमिल अनुवाद किया, और अपनी रचनाओं से आधुनिक तमिल साहित्य को नया रूप दिया, जिन्होंने कम उम्र में ही भारती की उपाधि प्राप्त की और भारत की आजादी की लड़ाई में महत्वपूर्ण योगदान दिया.

जन्म और प्रारंभिक जीवन:

जन्म: 11 दिसंबर, 1882, एट्टैयापुरम, तमिलनाडु में.

माता-पिता: लक्ष्मी अम्मल और चिन्नास्वामी अय्यर.

शिक्षा और प्रतिभा: बचपन से ही मेधावी, 11 वर्ष की आयु में ही कविता प्रतिभा के कारण 'भारती' की उपाधि मिली. बनारस प्रवास के दौरान आध्यात्म और राष्ट्रवाद से जुड़े.

कार्य और योगदान:

राष्ट्रवाद: भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय, कविताओं के माध्यम से लोगों को प्रेरित किया.

पत्रकारिता: 'इंडिया' (तमिल साप्ताहिक) और 'बाला भारतम' (अंग्रेजी साप्ताहिक) जैसे पत्रों का संपादन किया.

भाषा और साहित्य: तमिल, हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी सहित कई भाषाओं के ज्ञाता थे; तमिल साहित्य को आधुनिकता दी, "वंदे मातरम" का तमिल में अनुवाद किया.

समाज सुधार: नारी अधिकारों और जाति व्यवस्था के विरोधी थे, समानता में विश्वास रखते थे.

प्रमुख रचनाएँ:

काव्य: कन्नन पातु, कुयिल पातु, पंचली सबथम (पंचालि शपथ).

अन्य: विनायक ननमणिमलाई, भगवद गीता और पतंजलि के योग सूत्रों का तमिल अनुवाद.

मृत्यु और विरासत:

निधन: 12 सितंबर, 1921 (मात्र 39 वर्ष की आयु में).

विरासत: आधुनिक तमिल साहित्य के जनक, राष्ट्रकवि के रूप में पूजे जाते हैं. उनकी जयंती पर 'भारतीय भाषा उत्सव' मनाया जाता है.



प्रेरणा पाण्डेय (आचार्या)

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

विजय दिवस



हर वर्ष 16 दिसंबर को हमारा देश विजय दिवस मनाता है। यह दिन भारत के अदम्य साहस, वीरता और देशभक्ति की अमर गाथा को याद करने का दिन है। वर्ष 1971 में भारत ने पाकिस्तान पर विजय प्राप्त कर बांग्लादेश को एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में स्थापित किया था। यह जीत भारतीय सेना की वीरता, निष्ठा और त्याग का परिणाम थी।

विजय दिवस हमें यह सिखाता है कि सच्ची शक्ति केवल हथियारों में नहीं, बल्कि साहस, एकता और देशप्रेम में होती है। हमारे सैनिकों ने कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी हार नहीं मानी और अपनी मातृभूमि की रक्षा के लिए अपने प्राणों की आहुति दी।

विजय दिवस केवल एक युद्ध की जीत नहीं, बल्कि यह उस भावना का प्रतीक है कि जब देश की रक्षा की बात आती है, तो हर भारतीय एकजुट होकर राष्ट्र के लिए समर्पित हो जाता है। हमारे वीर सैनिकों ने अपने प्राणों की आहुति देकर यह संदेश दिया कि “राष्ट्र सर्वोपरि है।”

हमें अपने वीर जवानों से प्रेरणा लेनी चाहिए। उन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी हिम्मत नहीं हारी और मातृभूमि की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। आज हमारा कर्तव्य है कि हम भी अपने जीवन में अनुशासन, परिश्रम और देशभक्ति के मार्ग पर चलें।

विजय दिवस हमें यह संदेश देता है कि हमें अपने देश के गौरव को सदैव बनाए रखना है और हर परिस्थिति में अपने राष्ट्र के प्रति निष्ठावान रहना है। आओ, इस विजय दिवस पर हम सभी यह संकल्प लें कि हम अपने सैनिकों के बलिदान को व्यर्थ नहीं जाने देंगे और सदैव अपने देश को गौरवान्वित करने का प्रयास करेंगे।

जय हिंद! जय भारत।



अन्नु सिंह (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

गणितज्ञ रामानुज जयंती

श्रीनिवास रामानुजन एक महान भारतीय गणितज्ञ थे जिन्होंने संख्या सिद्धांत, अनंत श्रृंखला, और गणितीय विश्लेषण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी जयंती 22 दिसंबर को मनाई जाती है, जिसे राष्ट्रीय गणित दिवस के रूप में भी जाना जाता है।

रामानुजन का जीवन

रामानुजन का जन्म 22 दिसंबर 1887 को तमिलनाडु के ईरकोड में हुआ था। उनके पिता का नाम कृष्ण स्वामी अय्यर था, जो एक कर्कश थे। रामानुजन की माता का नाम कोमलताम्मल था, जो एक गृहिणी थीं। रामानुजन को बचपन से ही गणित में रुचि थी। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा ईरकोड में पूरी की और बाद में कुनूर में पढ़ाई की।

रामानुजन की उपलब्धियाँ

रामानुजन ने अपने जीवनकाल में कई महत्वपूर्ण योगदान दिए। उनकी कुछ प्रमुख उपलब्धियाँ हैं:

- रामानुजन प्राइम: रामानुजन ने प्राइम संख्याओं के बारे में एक महत्वपूर्ण सिद्धांत दिया, जिसे रामानुजन प्राइम कहा जाता है।
- रामानुजन थीटा फंक्शन: रामानुजन ने थीटा फंक्शन के बारे में एक महत्वपूर्ण सिद्धांत दिया, जिसे रामानुजन थीटा फंक्शन कहा जाता है।
- रामानुजन का योग: रामानुजन ने अनंत श्रृंखला के योग के बारे में एक महत्वपूर्ण सिद्धांत दिया, जिसे रामानुजन का योग कहा जाता है।

रामानुजन की मृत्यु 26 अप्रैल 1920 को हुई थी। उनकी मृत्यु के बाद, उनके काम को दुनिया भर में प्रसिद्धि मिली। उन्हें 20वीं शताब्दी के महान गणितज्ञों में से एक माना जाता है।

निष्कर्ष

श्रीनिवास रामानुजन एक महान गणितज्ञ थे जिन्होंने गणित के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी जयंती को राष्ट्रीय गणित दिवस के रूप में मनाया जाता है, जो हमें उनके काम को याद करने के लिए प्रेरित करता है। रामानुजन जयंती 22 दिसंबर को मनाई जाती है, जो महान भारतीय गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन की जयंती है।



भावना शर्मा (आचार्या)

सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा

मदन मोहन मालवीय का जन्म 25 दिसम्बर, 1861, इलाहाबाद में हुआ था। एक भारतीय विद्वान, शिक्षा सुधारक और भारतीय राष्ट्रवादी आंदोलन के नेता थे। मालवीय जी प्रख्यात संस्कृत विद्वान पंडित बृजनाथ के पुत्र थे और उनकी प्रारंभिक शिक्षा दो संस्कृत पाठशालाओं (पारंपरिक विद्यालयों) में हुई।

स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका

उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम आंदोलनों, उद्योगों को बढ़ावा देने, देश के आर्थिक और सामाजिक विकास में योगदान देने, शिक्षा, धर्म, सामाजिक सेवा, हिंदी भाषा के विकास और राष्ट्रीय महत्त्व से संबंधित कई अन्य गतिविधियों में हिस्सा लिया। वर्ष 1930 में जब महात्मा गांधी ने नमक सत्याग्रह और सविनय अवज्ञा आंदोलन शुरू किया, तो उन्होंने इसमें सक्रिय रूप से हिस्सा लिया और गिरफ्तार भी हुए। महात्मा गांधी ने उन्हें 'महामना' की उपाधि दी थी और भारत के दूसरे राष्ट्रपति डॉ. एस. राधाकृष्णन ने उन्हें 'कर्मयोगी' का दर्जा दिया था। उनका निधन 12 नवम्बर, 1946 को इलाहाबाद में हुआ।

योगदान

मालवीय जी को 'गिरमिटिया मज़दूरी' प्रथा (बंधुआ मज़दूरी प्रथा का ही एक रूप है)को समाप्त करने में उनकी भूमिका के लिये याद किया जाता है। हरिद्वार के भीमगोड़ा में गंगा के प्रवाह को प्रभावित करने वाली ब्रिटिश सरकार की नीतियों से आशंकित मालवीय जी ने वर्ष 1905 में गंगा महासभा की स्थापना की थी। उन्होंने वर्ष 1915 में हिंदू महासभा की स्थापना की। उन्होंने 'सत्यमेव जयते' शब्द को लोकप्रिय बनाया। मालवीय जी के प्रयासों के कारण ही देवनागरी (हिंदी की लिपी) को ब्रिटिश-भारतीय अदालतों में पेश किया गया था। मालवीय जी ने वर्ष 1916 में बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (BHU) की भी स्थापना की थी।

पत्रकार

एक पत्रकार के रूप में उन्होंने वर्ष 1907 में एक हिंदी साप्ताहिक 'अभ्युदय' की शुरुआत की, जिसे वर्ष 1915 में दैनिक बना दिया गया, इसके अलावा उन्होंने वर्ष 1910 में हिंदी मासिक पत्रिका 'मर्यादा' भी शुरू की थी। उन्होंने वर्ष 1909 में एक अंग्रेज़ी दैनिक अखबार 'लीडर' भी शुरू किया था। मालवीय जी हिंदी साप्ताहिक 'हिंदुस्तान' और 'इंडियन यूनियन' के संपादक भी थे। वे कई वर्ष तक 'हिंदुस्तान टाइम्स' के निदेशक मंडल के अध्यक्ष भी रहे।

पुरस्कार और सम्मान

वर्ष 2014 में उन्हें मरणोपरांत देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान, भारत रत्न से सम्मानित किया गया था। वर्ष 2016 में भारतीय रेलवे ने मालवीय जी के सम्मान में वाराणसी-नई दिल्ली 'महामना एक्सप्रेस' शुरू की थी।



प्रियंका (आचार्या)

सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा

वीर बाल दिवस



भारत का इतिहास साहस, बलिदान और देशभक्ति की अनगिनत कहानियों से भरा है। इन्हीं प्रेरणादायक कथाओं में से एक है गुरु गोबिंद सिंह जी के साहसी पुत्र—साहिबज़ादे—जिनके शौर्य और बलिदान की याद में 26 दिसंबर को 'वीर बाल दिवस' मनाया जाता है। यह दिन केवल एक तिथि नहीं, बल्कि निष्ठा, वीरता और धर्म की रक्षा के अद्भुत उदाहरण का प्रतीक है।

साहिबज़ादे—साहिबज़ादा अजीत सिंह, जुझार सिंह, जोरावर सिंह और फतेह सिंह—सिख इतिहास के ऐसे बाल वीर हैं जिन्होंने छोटी-सी आयु में वह साहस दिखाया जिसे बड़े-बड़े योद्धा भी नहीं दिखा पाते। साहिबज़ादा जोरावर सिंह और फतेह सिंह ने तो मात्र 9 और 7 वर्ष की आयु में धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर दिए। उनके अटल साहस, सत्य के प्रति निष्ठा और अन्याय के आगे झुकने से इनकार ने आने वाली पीढ़ियों को एक अमर संदेश दिया—उम्र छोटी हो सकती है, पर संकल्प और साहस बड़ा हो सकता है।

वीर बाल दिवस बच्चों को प्रेरित करता है कि वे साहिबज़ादों की तरह निर्भय बनें, सत्कर्मों का साथ दें और अपने कर्तव्यों के प्रति सदैव सजग रहें। इस अवसर पर हम सभी को यह प्रण लेना चाहिए कि हम अपने बच्चों को ऐसी शिक्षा दें जो उन्हें न केवल पढ़ाई में आगे बढ़ाए बल्कि उनके भीतर चरित्र, साहस और सच्चाई का दीप भी प्रज्वलित करे। वीर बाल दिवस हमें यह स्मरण कराता है कि सच्चे नायक वही हैं जो सत्य, धर्म और देश के सम्मान के लिए अडिग रहते हैं।



शशि किरण (आचार्या)

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा



गुरु गोबिंद सिंह जयंती एक महत्वपूर्ण सिख त्योहार है, जो सिख धर्म के दसवें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी के जन्मदिन के उपलक्ष्य में मनाया जाता है। यह त्योहार सिख समुदाय के लिए बहुत महत्वपूर्ण है और पूरे भारत में बड़े उत्साह और श्रद्धा के साथ मनाया जाता है।

गुरु गोबिंद सिंह जी का जीवन और योगदान: गुरु गोबिंद सिंह जी का **जन्म 22 दिसंबर 1666 को पटना, बिहार** में हुआ था। वह सिख धर्म के दसवें और अंतिम गुरु थे। गुरु गोबिंद सिंह जी ने सिख धर्म को मजबूत और संगठित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने खालसा पंथ की स्थापना की और सिखों को एकजुट करने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए।

गुरु गोबिंद सिंह जयंती कैसे मनाई जाती है?

गुरु गोबिंद सिंह जयंती के अवसर पर सिख समुदाय के लोग विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं, जिनमें शामिल हैं:

- 1. अखंड पाठ:** गुरुद्वारों में अखंड पाठ का आयोजन किया जाता है, जिसमें गुरु ग्रंथ साहिब का पाठ किया जाता है।
- 2. कीर्तन:** गुरुद्वारों में कीर्तन का आयोजन किया जाता है, जिसमें सिख भजन और कीर्तन गाए जाते हैं।
- 3. लंगर:** गुरुद्वारों में लंगर का आयोजन किया जाता है, जिसमें प्रसाद वितरित किया जाता है।
- 4. संगत:** सिख समुदाय के लोग संगत में भाग लेते हैं और गुरु गोबिंद सिंह जी के जीवन और शिक्षाओं पर चर्चा करते हैं।

गुरु गोबिंद सिंह जयंती का महत्व: गुरु गोबिंद सिंह जयंती सिख समुदाय के लिए एक महत्वपूर्ण अवसर है, जो गुरु गोबिंद सिंह जी के जीवन और शिक्षाओं को याद करने और उनके आदर्शों को अपनाने का अवसर प्रदान करता है। यह त्योहार सिख समुदाय को एकजुट करने और उनकी आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत को मजबूत करने में मदद करता है।



अतिथियों का विद्यालय भ्रमण





दिनांक -21/11/2025 दिन- शुक्रवार को सरस्वती शिशु मंदिर,नोएडा के वंदना सत्र में दीपक जी, धर्मेन्द्र जी व English communication में प्रशिक्षण प्राप्त आचार्यों का विद्यालय भ्रमण हेतु आगमन हुआ। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा जी व आए अतिथियों ने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन व पुष्पार्चन किया तथा भैया-बहिनों से वार्ता की।



सप्तशक्ति संगम







दिनांक 8 नवंबर 2025 दिन शनिवार को अतिथियों के द्वारा दीप प्रज्ज्वलन एवं पुष्पार्चन के साथ सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में “सप्तशक्ति संगम” कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में 350 मातृशक्ति ने भाग लिया। कार्यक्रम लगभग ढाई घंटे चला। कार्यक्रम की अध्यक्ष रुपज्योति कुँवर जी (ई सी. सी. ई. विशेषज्ञ), मुख्य वक्ता, कविता रस्तोगी जी (प्रधानाचार्या, संयोजिका सप्तशक्ति संगम गौतमबुद्ध नगर) ने अपना विषय रखते हुए बताया कि श्रीमद् भागवत गीता में नारी की सप्त शक्तियों की चर्चा की गई है जिसकी कीर्ति, लक्ष्मी, वाणी, स्मृति, मेधा, धृति और क्षमा शामिल है। उन्होंने यह भी बताया कि सप्तशक्ति जैसे कार्यक्रम हमें यह याद दिलाते हैं कि जब एक नारी सशक्त होती है तो पूरा परिवार, समाज और देश भी सशक्त बनता है।

संभाग निरीक्षक



दिनांक- 10/11/25 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा के वंदना सत्र में श्री जगबीर शर्मा जी (संभाग निरीक्षक मेरठ संभाग) का आगमन हुआ। उन्होंने मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्ज्वलन व पुष्पार्चन किया। विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा जी ने पटका पहनाकर उनका स्वागत किया। वंदना के पश्चात उन्होंने भैया-बहिनों से वार्ता की तथा भैया-बहिनों को शिक्षा से संबंधित अनेक प्रेरणादायक बातों को भी बताया।

श्री जगबीर शर्मा जी ने आचार्य बंधु-बहिनों से भी बातचीत की और अभिभावक संपर्क व सामाजिक संपर्क के विषय में बताया।

स्वर्ण प्राशन



सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा, सेक्टर-12 में प्रतिमाह पुण्य नक्षत्र में शिशु वाटिका के भैया/ बहिनों को स्वर्ण प्राशन कराया जाता है। इसी क्रम में दिनांक- 11/11/25 दिन- मंगलवार को भैया-बहिनों का स्वर्ण प्राशन कराया गया। स्वर्ण प्राशन औषधि भैया-बहिनों की इम्युनिटी को बूस्ट करती है।

क्षेत्रीय शिशु वर्ग खेलकूद समारोह





क्षेत्रीय शिशु वर्ग खेलकूद समारोह 2025 -26, दिनांक 9 ,10 ,11 नवंबर 2025 को सैद नगली अमरोहा में एथलेटिक्स, खो-खो ,कबड्डी, बैडमिंटन ,शतरंज व कुश्ती की प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं । जिसमें 77 विद्यालय से आए 451 भैया-बहनों ने भाग लिया। प्रतियोगिता में सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा के 67 भैया-बहनों ने प्रतिभाग किया। जिन्होंने अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए खो-खो में दोनों वर्गों की चारों टीमों (अंडर 13 अंडर 11 भैया-बहिन)ने प्रथम स्थान प्राप्त करते हुए चैंपियनशिप पर अपना कब्जा जमाया । कबड्डी की अंडर 13 की बहनों की टीम ने भी प्रथम स्थान प्राप्त कर चैंपियनशिप अपने नाम की। बैडमिंटन में 7 भैया -बहनों ने अपने-अपने वर्गों में प्रथम स्थान प्राप्त कर चैंपियनशिप प्राप्त की ।

वंदे मातरम्



दिनांक -14/11/25 को सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा में एक अत्यंत प्रेरणादायक क्षण “वंदे मातरम्” के 150 वर्ष को मनाया गया। यह केवल एक गीत नहीं, बल्कि हमारी मातृभूमि के प्रति अटूट प्रेम, शौर्य और त्याग का अमर संदेश है।

आचार्य हरिओम जी ने भैया-बहिनों को 150 वर्षों की इस गौरवशाली परंपरा को आगे बढ़ाते हुए संकल्प दिलाया कि:

“हम देश का भविष्य हैं, और अपने कर्तव्यों द्वारा भारत को और महान बनाएँगे।”

जय हिंद, जय भारत।

रानी लक्ष्मीबाई जयंती



दिनांक- 19 नवम्बर 2025 दिन- बुधवार को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की जयंती मनाई गई। रानी लक्ष्मीबाई का जीवन प्रत्येक बालक-बालिका के लिए साहस, आत्मविश्वास और देशभक्ति का अनुपम उदाहरण है। उन्होंने कठिन परिस्थितियों में भी हार नहीं मानी और मात्र 23 वर्ष की आयु में अद्भुत पराक्रम दिखाते हुए देश की स्वतंत्रता के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। आचार्या प्रेरणा शर्मा जी ने भैया-बहिनों को रानी लक्ष्मीबाई का संदेश बताते हुए कहा कि यह हमें सिखाता है कि यदि संकल्प दृढ़ हो, तो उम्र और परिस्थितियाँ कभी बाधा नहीं बनती।



नगर भ्रमण (पिकनिक)







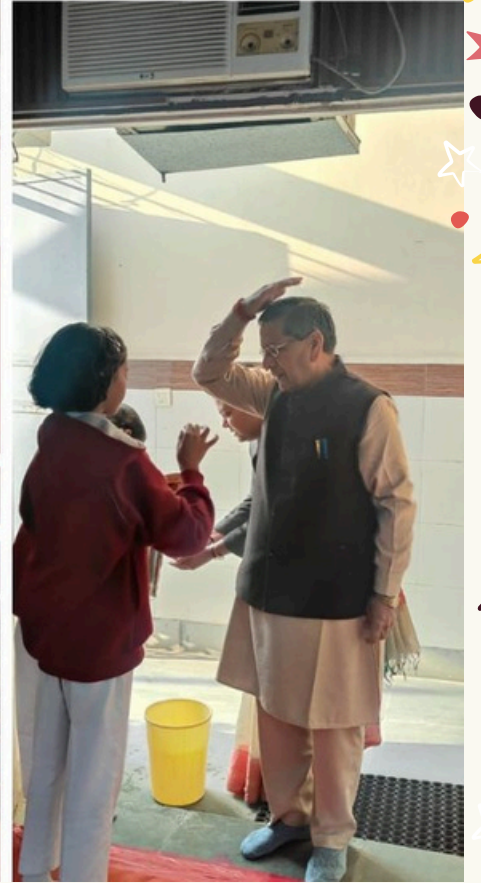
दिनांक - 22/11/25 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा के शिशु वाटिका के भैया बहनों को नगर भ्रमण हेतु गाजियाबाद स्थित जंगल एडवेंचर ले जाया गया। भैया-बहिनों ने वहां बहुत से एडवेंचर किया जैसे- camel riding, boating, trampoline, dancing, plain riding, horse riding etc. भैया-बहिनों ने पिकनिक का आनंद लिया और बहुत खेले कूदे। सभी के लिए यह स्मरणीय अनुभव रहा।



विद्यालय निरीक्षण







विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में विद्यालय निरीक्षण की दृष्टि से श्रीमान बलवीर जी, श्रीमान पवन जी, श्रीमान अशोक जी, श्रीमती ज्योति जी, श्रीमती एकता जी, श्रीमती बृजेश जी व क्षेत्रीय शिशु वाटिका प्रमुख शिवकुमार जी का द्विदिवसीय (25, 26/11/25) प्रवास रहा।

प्रातः काल वंदना सत्र से लेकर अवकाश तक संपूर्ण शैक्षिक, भौतिक व अन्यान्य व्यवस्थाओं का अवलोकन किया।

अंत में अवकाशोपरान्त विद्यालय के आचार्यों के साथ बैठक में अपने अनुभव और विचार रखे। बैठक के अंत में विद्यालय के प्रधानाचार्य श्रीमान देवेन्द्र कुमार शर्मा जी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

सप्तशक्ति संगम कार्यक्रम





दिनांक- 29/11/25 दिन- शनिवार को सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा में सप्तशक्ति संगम कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की मुख्य वक्ता श्रीमती मोनिका चौहान जी (समाज सेविका, लेखिका) ने कुटुंब प्रबोधन व 6 भ (भोजन, भजन, भ्रमण, भवन, भेष, भाषा) का नारी शक्ति के जीवन में क्या महत्व है इस विषय पर चर्चा की। कार्यक्रम की अध्यक्ष श्रीमती डॉ. पायल गुप्ता जी (बाल मनोविज्ञान चिकित्सक) ने 5 P (Passion, polite, perseverance, peace, positivity) का वर्णन किया। कार्यक्रम की विशिष्ट वक्ता साक्षी चौधरी जी (CA, सर्टिफाइड POSH Trainer) ने भारत के विकास में महिलाओं की भूमिका का विषय रखा।

जन्मोत्सव हवन कार्यक्रम





सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में नवंबर माह में जन्मे भैया-बहिनों के जन्म दिवस पर हवन-पूजन कार्यक्रम आयोजित किया गया। हवन में श्रीमान यतेंद्र कुमार शर्मा जी (सह संगठन मंत्री), श्रीमान प्रदीप भारद्वाज जी, श्रीमान सोमगिरी जी, अन्य पदाधिकारी, अभिभावक बंधुओं व विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेंद्र कुमार शर्मा जी ने भैया-बहिनों को आशीर्वाद देकर उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। साथ ही, उन्हें अच्छे स्वास्थ्य, उत्तम व्यवहार, नियमित अध्ययन और लक्ष्य की ओर निरंतर प्रयास करने के लिए प्रेरित किया।



सह संगठन मंत्री





दिनांक- 28/11/25 को हमारे विद्यालय सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा के शिशु वाटिका का श्रीमान यतेंद्र कुमार शर्मा जी (सह संगठन मंत्री) व अन्य पदाधिकारियों द्वारा शिशु वाटिका की 12 प्रमुख शैक्षिक व्यवस्थाओं एवं विविध शैक्षिक गतिविधियों का अवलोकन किया।

मंत्री जी ने कक्षा-कक्षों की साज-सज्जा, शिक्षण-सामग्री की उपलब्धता, बाल-हितैषी वातावरण, मौलिक अभिव्यक्ति के अवसर एवं गतिविधियों को देखा। मंत्री महोदय ने शिक्षकों को सुझाव दिए कि वे बालकों के सर्वांगीण विकास के लिए नवाचारी गतिविधियों, खेल-आधारित अभ्यासों एवं व्यक्तिगत ध्यान की प्रक्रिया को निरंतर आगे बढ़ाते रहें।



बताओ तो जानें



27 फूल खोजिए



दिशा संकेत :    

सू	र	ज	मु	खी	टे	सू	चाँ	अ
ह	क	च	मे	ली	क	द	म्ब	ड़
र	म्पा	म	र	ज	नी	गं	धा	हु
सिं	बे	गु	ल	मो	ह	र	रा	ल
गा	गु	ला	ब	क	गु	के	त	की
र	ड़	बा	गें	ल	ने	झा	की	ड
मौ	ह	स	दा	ब	हा	र	रा	हे
जू	ल	उ	म	नो	का	मि	नी	लि
ही	दी	श्री	बो	ग	न	बे	लि	या



1. सुब्रमण्यम भारती का जन्म कब और कहां हुआ था?
2. भारतीय नौसेना द्वारा 4 दिसंबर 1971 को कौन-सा अभियान चलाया गया था?
3. वीर बलिदान दिवस किसका प्रतीक है?
4. श्रीनिवास रामानुजन जी की जयंती किस रूप में मनाई जाती है?
5. श्रीनिवास रामानुजन जयंती कब मनाई जाती है?
6. भारतीय रागों की उत्पत्ति कब से मानी जाती है?
7. भारत में हर वर्ष विजय दिवस कब मनाया जाता है?
8. भाषा दिवस मनाने का उद्देश्य क्या है।
9. गुरु गोविंद सिंह का जन्म कब और कहां हुआ था?
10. सर्वांगीण विकास से क्या तात्पर्य है?

आलोक- उपरोक्त सभी प्रश्नों के उत्तर इसी अंक के लेखों में विद्यमान है अतः इसी अंक के उत्तर मान्य होंगे।

कक्षा- द्वितीय से पञ्चम तक के सभी भैया/बहिनों को ई- पत्रिका के पृष्ठ क्रमांक 37 व 38 में दिए प्रश्नों के उत्तर कक्षाचार्य जी के व्हाट्सप्प पर दिनांक - 25 दिसंबर 2025 तक भेजने होंगे।